डॉ० ओम प्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज, आरा

विषय- संस्कृत, बी० ए० (स्नातक) प्रतिष्ठा
प्रथम वर्ष, प्रथम पत्र

Date 06/07/20

किरातार्जुनीयम् - प्रथम सर्ग

पद्यांश व्याख्या -

द्विषां विघाताय विधातुमिच्छतो
रहस्यनुज्ञामधिगम्य भूभृतः ।
स सौष्ठवौदार्य विशेषशालिनीम्
विनिश्चितार्थामिति वाचमाददे ॥3॥

अन्वयः - द्विषां विघाताय विधातुम् इच्छतः भूभृतः अनुज्ञाम् अधिगम्य सः रहसि सौष्ठवौदार्य-विशेषशालिनीं विनिश्चितार्थाम् इति वाचम् आददे ॥

सान्वयपदव्याख्या :- (द्विषां विघाताय) शत्रुओं के विनाश के लिए (विधातुमिच्छतः) उद्योग करने के इच्छुक (भूभृतः अनुज्ञामधिगम्य) राजा का आदेश पाकर (सः रहसि) उसने एकान्त में (सौष्ठवौदार्य-विशेषशालिनीम्) शब्दों के सौष्ठव और अर्थ की गम्भीरता से विशेष रूप से विभूषित एवं (विनिश्चितार्थाम्) स्पष्ट अर्थों वाला (इति वाचम्) इस प्रकार का वचन बोलना (आददे) आरम्भ किया।

भावार्थ :- इस पद्य में यह कहा गया है कि किस प्रकार राजा की आज्ञा पाकर वनेचर ने शब्द-सौष्ठव तथा अर्थ गाम्भीर्य से युक्त स्पष्ट अर्थ वाला वचन बोलना आरम्भ किया।

पदव्याख्या :- द्विषाम् - द्विषन्ति इति द्विषः, तेषाम्। द्वेष करनेवालों का, द्विष + क्विप् प्रत्यय कर्ता कर्तरि। विघाताय - वि + हन् + घञ् प्रत्यय भावे। 'तुमर्थाच्च भाववचनात्' नियम से चतुर्थी विभक्ति। विनाश के लिए। विधातुम् - वि + धा + तुमुन् भावे। प्रयत्न करने के लिए। इच्छतः = इच्छा करनेवाले का, इष + शतृ = इच्छत् षष्ठी (भूभृतः का विशेषण)। रहसि = एकान्त में। अनुज्ञाम् = आज्ञा को, अनु + ज्ञा + भाववाचक अङ् प्रत्यय। अधिगम्य = प्राप्त करके, अधि + गम + क्त्वा = ल्यप्। भूभृतः = राजा का। षष्ठी एकवचन। भुवं बिभर्ति इति भूभृत्। पृथ्वी का पालन करनेवाला भू + भृत + क्विप् कर्तरि। सौष्ठवौदार्यविशेषशालिनीम् = शब्द के सौष्ठव और अर्थ के वैभव से विशेषरूप से समन्वित। सुष्ठु इत्यस्य भावः सौष्ठवम् सुष्ठु अव्ययपद से अण् प्रत्यय। उदारस्य भावः औदार्यम्, उदार + ष्यञ् प्रत्यय। सौष्ठवं च औदार्यं च सौष्ठवौदार्ये (द्वन्द्व समास)। सौष्ठवौदार्ये एव विशेषस्तेन शालते - जिसमें सौष्ठव और औदार्य विशेषरूप से परिलक्षित है। विशेषः = वि + शिष + घञ्। सौष्ठवौदार्यविशेषेण शालते इति सौष्ठवौदार्यविशेषशालिनी, ताम्। शाल + णिनि + ङीप् स्त्रीलिंग प्रत्यय (वाचम् का विशेषण) विनिश्चितार्थाम् = स्पष्ट अर्थों वाली, जिसका अर्थ विशेष रूप से निश्चित हो।

Scanned with CamScanner

विशेषेण निश्चितः विनिश्चितः, अर्थः यस्याः सा, ताम्
(वाचम् का विशेषण) वाचम् आददे = वचन ग्रहण
किया, बोलना आरम्भ किया, आ + दा + लिट् प्रथमपुरुष एकवचन

टिप्पणी- इसमें वचन के तीन गुणों का निर्देश किया
गया है, शब्द सौष्ठव - सुन्दर उपयुक्त शब्दों का
प्रयोग, अर्थवत्ता - अर्थ स्पष्टता तथा विनिश्चितार्थता-
प्रमाण से युक्त निश्चित अर्थवाली। इति

Scanned with CamScanner